

Udghatana Kavacha Stotram

——
उद्घाटनकवचस्तोत्रम्

——
Document Information



Text title : Udghatana Kavacha Stotram

File name : udghATanakavachastotram.itx

Category : devii, ShaTchakrashakti, kavacha, stotra

Location : doc_devii

Proofread by : Aruna Narayanan

Latest update : December 24, 2021

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

September 24, 2023

sanskritdocuments.org



Udghatana Kavacha Stotram

उद्घाटनकवचस्तोत्रम्



अेवं तान्त्रिक-शिव-सञ्जुवनी-प्रयोग
अनुष्ठान की पद्धति के अनुसार स्नान, पूजा से निवृत्त होकर आसन
पर बैठें । आसन शुद्धि करें । शिष्या बन्धन करें । आत्म शुद्धि
करें, आचमन करें । हिर रुद्रसूक्त पढें, सङ्ख्य ग्रन्थ
करें । भूमि, वाराह, शेष, कुर्म का पञ्चोपचार से पूजन करें ।
कमानुसार हिर कलश की सङ्क्षिप्त पूजा करके जल को अभिमन्त्रित
कर आत्मप्रोक्षणा पूजा सामग्री का प्रोक्षणा करें । पञ्चगव्य
प्राशन कर लें । उचित समर्पण तो सर्वप्रथम दशविध स्नान
भी करें । दीपक का पूजन करें । दिग्गक्षा का विधान करें तथा
गाणपति के पूजन, अभिषेक, आरती व पुष्पाञ्जलि से निवृत्त होकर
षोडशमातृका पूजन, नवग्रह पूजन, कलश पूजन, ब्राह्मण-वरण
(११ ब्राह्मणों की आवश्यकता होगी) पुण्याहवाचन तथा प्रधान-देवता
शिव का षोडशोपचार से पूजन करें । ब्राह्मणों को यथा-योग्य
वरण- साहित्य प्रदान करें । ध्यान से लेकर पाद्य, अर्घ्य, आचमन,
स्नान, पञ्चामृत-स्नान, शुद्धस्नान, वस्त्र, उपवस्त्र, यज्ञोपवीत,
गन्ध, अक्षत, पुष्प, दूर्वा, शमीपत्र, बिल्वपत्र, अभीर, गुलाल,
परिमल द्रव्य, धूप, दीपक, नैवेद्य, ऋतुकुल, आचमन, अण्ड
ऋतुकुल, पान, सुपारी, लवङ्ग, छलायत्री, कर्पूर (नागवल्ली-वीटिका)
व द्रव्यदक्षिणा समर्पण करें । तदनन्तर मूर्ति (विङ्ग) के आकार
की विशालता या लघुता का ध्यान रभकर साङ्ग यावलों को शुद्ध
जल से धोकर शुद्ध जल में पकावें ।

मननाद् विश्वविज्ञानं त्राणं संसार-बन्धनात् ।

यतः करोति संसिद्धिं “मन्त्र” इत्युच्यते भूषैः ॥

मन्त्र के स्थूल अेवं सूक्ष्म रूप से पुनः दो अङ्ग माने गये हैं

जिनमें स्थूल रूप में-प्राणव, बीज, कूट, अक्षर तथा धनके

विशिष्ट संयोजन से सम्बद्ध मन्त्र के पल्लवादि-विधान आते हैं;
किन्तु सूक्ष्म रूप में उनके स्वरूप, ध्यान, शक्ति, गति, क्रियाकारित्व
आदि का समावेश होता है ।

उन में भी सर्वाधिक महत्त्व कुण्डलिनी-जागरण का है और यह
कार्य शरीरस्थ मूलाधारादि चक्रों के उन्मीलन की अपेक्षा रहता
है । चक्रों के उन्मीलन का प्रकार जप एवं ध्यान से सम्भव है ।
तत्तत् चक्रों की अधिष्ठात्री देवता जब तक प्रसन्न नहीं होती, तब
तक इस कार्य में भी बाधाओं आती हैं । ये बाधाओं केवल इसी जन्म से
सम्बद्ध न होकर अपर जन्म में भी बाधक बनती हैं । सम्भवतः
इसी दृष्टि से “रुद्रयामल” में शक्ति-उपासकों के लिये एक “उद्घाटन
कवय” स्तोत्र दिया है, जिसका भक्तिपूर्वक अजपा जप के पश्चात् पाठ
करना अत्यन्त लाभप्रद माना गया है । यह कवय इस प्रकार है-

मूल-पाठः-

मूलाधारे स्थिता देवि, त्रिपुरा चक्रनायिका ।

नृजन्मभीति-नाशार्थं, सावधाना सदाऽस्तु मे ॥ १ ॥

स्वाधिष्ठानाभ्ययङ्गस्था, देवी श्रीत्रिपुरेशिनी ।

पशुबुद्धिं नाशयित्वा, सर्वैश्वर्यप्रदाऽस्तु मे ॥ २ ॥

मणिपूरे स्थिता देवी, त्रिपुरेशीति विश्रुता ।

स्त्रीजन्म-भीतिनाशार्थं, सावधाना सदाऽस्तु मे ॥ ३ ॥

स्वस्तिके संस्थिता देवी, श्रीमत् त्रिपुरसुन्दरी ।

शोकभीति-परित्रस्तं, पातु मामनघं सदा ॥ ४ ॥

अनाडताभ्य-निलया, श्रीमत् त्रिपुरवासिनी ।

अज्ञानभीतितो रक्षां, विदधातु सदा मम ॥ ५ ॥

त्रिपुराश्रीरिति प्याता, विशुद्धाभ्य-स्थलस्थिता ।

जरोद्भव-भयात् पातु, पावनी परमेश्वरी ॥ ६ ॥

आज्ञायङ्गस्थिता देवी त्रिपुरामालिनी तु या ।

सा मृत्युभीतितो रक्षां, विदधातु सदा मम ॥ ७ ॥

ललाट-पद्म-संस्थाना, सिद्धा या त्रिपुरादिङ्का ।

सा पातु पुण्यसम्भूतिर्भीति-सङ्घात् सुरेश्वरी ॥ ८ ॥

ત્રિપુરામ્બેતિ વિખ્યાતા, શિરઃપદ્મે સુસંસ્થિતા ।

સા પાપભીતિતો રક્ષાં, વિદધાતુ સદા મમ ॥ ૯ ॥

યે પરામ્બાપદસ્થાન-ગમને વિદ્મ-સગ્ચયાઃ ।

તેભ્યો રક્ષતુ યોગેશી, સુન્દરી સકલાર્તિહા ॥ ૧૦ ॥

ઉપર્યુક્ત સ્તોત્ર મેં ભગવતી કે શ્રીચક્ર મેં વિરાજમાન આવરણ-
ગત પ્રમુખ દેવિયોં સે પ્રાર્થના કી ગઈ હૈ જો કિ ચક્ર નાયિકાએ
હેં । ચહાં નવ આવરણ રૂપ નૌ શરીરગત ચક્ર એવં હૃદય મેં
વિરાજમાન દેવિયોં સે જિન-જિન ભયોં સે રક્ષા કી પ્રાર્થના કી ગઈ
હેં ઉનકી તાલિકા ઇસ પ્રકાર હૈ-


ચક્ર	ચક્ર નાયિકા	ભય
૧. મૂલાધાર	ત્રિપુરા	નૃજન્મ
૨. સ્વાધિષ્ઠાન	ત્રિપુરેશિની	પશુબુદ્ધિ
૩. મણિપૂર	ત્રિપુરેશી	સ્ત્રીજન્મ
૪. સ્વસ્તિક	ત્રિપુરસુન્દરી	શોક
૫. અનાહત	ત્રિપુરવાસિની	અજ્ઞાન
૬. વિશુદ્ધ	ત્રિપુરાશ્રી	જરા
૭. આજ્ઞા	ત્રિપુરામાલિની	મૃત્યુ
૮. લલાટપદ્મ	ત્રિપુરા સિદ્ધા	ભીતિસઙ્ઘ
૯. સહસ્રાર	ત્રિપુરામ્બા	પાપ
૧૦. બિન્દુ	સુન્દરી યોગેશી	વિદ્મ

ઇન સબ ભયોં સે નિવૃત્તિ કી યાચના કરતે હુએ ઇસમેં પરામ્બા કે
ચરણોં મેં શરણ-પ્રાપ્તિ કી કામના કી ગઈ હૈ જો ઉચિત હી હૈ । એસે
હી અન્તર્યાગ કે લિએ અન્ય ઉપયોગી વિધાન શ્રી રુદ્રયામલ મેં વર્ણિત
હેં । ઉપર્યુક્ત ચક્રોં મેં હી પ્રત્યેક આવરણ દેવી કે મન્ત્ર કા જપ
કિયા જાતા હૈ । જૈસે-જૈસે સાધના ક્રમ આગે બઢતા હૈ ઉસમેં ઔર
ભી વિશિષ્ટ અવકાશાનુસાર સહસ્રનામાર્ચનાદિ ભી કિયે જાતે હૈ ।
મહાનૈવેદ, આરતી, પુષ્પાઝલિ, પ્રદક્ષિણા, કામકલાધ્યાન, બલિદાન,
જપ, પુષ્પાઝલિસ્તોત્ર, કલ્યાણવૃષ્ટિસ્તોત્ર, સર્વસિદ્ધિકૃતસ્તોત્ર
ઔર ક્ષમા-પ્રાર્થના, ગુરુસ્તોત્રાદિ કા પાઠ કરકે સુવાસિનીપૂજન,
તત્ત્વશોધન, પૂજાસમર્પણ દેવતોદ્ધાસન શાન્તિસ્તવ પાઠ કે સાથ


अर्थनविधि पूर्ण होती है ।

एति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे उद्धाटनकवचस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

Proofread by Aruna Narayanan

——
Udghatana Kavacha Stotram

pdf was typeset on September 24, 2023

——
Please send corrections to sanskrit@cheerful.com

